व्यंग्य

ईश्वर की मृत्यु

प्रेम जनमेजय

“पिताजी, मुझे किसने बनाया है ? "

"पता नहीं चल, भाग यहाँ से !"

"नहीं। पिताजी, बताओ न, मुझे किसने बनाया है ?"

"ईश्वर ने।"

' और मम्मी को ?" "

“उसको भी ईश्वर ने।"

और... और बिट्टू, किट्टू, रीटू, सीमा, डौली सब को ?"

" उन्हें भी ईश्वर ने बनाया है।"

“ और आपको ?"

"मुझे भी बनाया है बाबा, सिर मत खा!"

" सारी दुनिया को ईश्वर ने ही बनाया है ?'

" हाँ, वही बनाता है सारी दुनिया को। "

'सब कुछ वही बनाता है ?"

" हाँ वही बनाता है, बस चुप भी कर ।"

अच्छा...!"

बच्चा उठकर कमरे के अंदर गया और ईश्वर की एक प्रतिमा उठा लाया। उसे उसने पिता के सामने फर्श पर दे मारा...

"ईश्वर तो मर गया...अब, पिताजी .?"

अजनबी

चौराहे पर लाश पड़ी थी। लाश के पास एक वृद्ध खड़ा था। भीड़ ने दर्शनार्थ दोनों को घेरा हुआ था।

डी.एस.पी. साहब फोर्स सहित पहुंचे। भीड़ देखते ही उनका ब्लड प्रेशर हाई हो गया। वह एकांत चाहते थे। उन्होंने भीड़ पर डंडे बरसवाए। भीड़ छंटी परंतु फिर जुट गई। मामला नाजुक था। साहब एकांत चाहते थे। भीड़ हट नहीं रही थी। साहब ने सिपाही को आवाज

लगाई, "पकड़ ले सबको, ले चल थाने। सबकी गवाही होगी।"

गवाही के नाम पर भीड़ गायब

"तू कौन है ?"

गई। रह गया आंखों में आंसू भरे एक वृद्ध।

"मैं इसका बाप हूं...इसका खून हुआ है..."

'तूने इसका खून करते किसी को देखा है ?"

"हां, देखा है..... मैं पहचानता हूं उसे...!"

"हूं... तो तूने देखा है। ले चलो साले को थाने।" थाने में पहले उसकी पिटाई हुई थी। फिर उसे पेश किया गया था। "इन्होंने मुझे पीटा है... यह देखो..."

"तो बेट्टी के, तूने खून होते देखा है ?" "मैं कह रहा हूं, इन्होंने मुझे पीटा है..."

"मैं भी कुछ कह रहा हूं न! पूछताछ में अपनी टांग न अड़ा बेट्टी के... जो मैं उसका जवाब दे, तो तूने खून होते देखा है ?"

"तू पहचान सकता है, क्यूं बेट्टी के, है न? पर बेट्टी के, मुझे यह बता कि क्या यह नहीं हो सकता कि तूने इसका कत्ल किया हो ?" "

"मैं... मैं.... मैं कत्ल करूंगा अपने बेटे का....!" " और क्या हमारा करेगा? हमें तो यह लगता है कि कत्ल तूने ही किया है.....

"मैंने! अपने बेटे का खून... मैंने किया है! अपने बेटे का खून मैं करूंगा...! यह... कैसे हो सकता है ?"

"क्यों नहीं हो सकता बेट्टी के, यह कोई राजा राम का जमाना है? यहां तो मां अपने बेटों का खुद गला दबावे है...ससुर-बहू मिलकर बच्चा पैदा कर लेवे हैं... भई, तू क्यों नहीं कर सकता खून? चक्कू पर उंगलियों के निशान हैं, वो कहां से आए ?" "वो तो उसे दर्द हो रहा था....मैंने निकाला था....

"निकाला था या मारा था...बेट्टी के! हम क्या जानें कानून की आंखों पर तो

पट्टी बंधी है। हम तो निशान देखेंगे।"

"मैंने खून नहीं किया है। मैंने उसे अपनी आंखों से खून करते देखा है।" "चोप्प बेट्टी के.. चिल्ला मत। कौन कहता है कि तूने खून नहीं किया,

बोल ?"

"मैं कहता हूं, मैं।"

"तू कहता है! अरे, वाह रे कहने वाले! तू कोई भगवान है या धर्मराज युधिष्ठिर जो हम तेरी बात मान लें! अरे 511! भेजियो पांचों को अंदर।"

पांच आदमीनुमा चेहरे अंदर आए थे। चेहरों पर क्रूरता हंस-खेल रही थी। पांचों सावधान खड़े हो गए थे।

"क्यों बुड्ढे, पहचानता है इन्हें ?"

"नहीं।"

"क्यों बेट्टी के... पहचानते हो पांचों इसे?".

"हां। इसने अपने बेटे का छ: इंची से हमारे सामने खून किया है। इसका बेटा इसकी मरजी के खिलाफ शादी करना चाहता था।" पांचों की उंगलियां उसकी ओर उठी हुई थीं।

उसका सिर घूम गया था। न्याय की सारी प्रक्रिया उसकी आंखों में चल गई थी। थानेदार बोल रहा था, "ईब बोल बेट्टी के, ये पांचों सुसरे क्या झूठ बोल रहे हैं। पंच तो पंच होते हैं और पंचों के मुंह से परमेश्वर बोलता है, इत्ता तो हम भी जानते हैं। ईब बोल...

वृद्ध का स्वर जैसे गंभीर हो गया था। वह बोला, "मैंने किसी का खून होते नहीं देखा है। यह मेरा बेटा नहीं है। मैं इसे नहीं पहचानता हूं।"